THE HERALD of Christian Science
informal translations from the publications of the Christian Science Publishing Society

चिरस्थायी सक्रियता
Ageless activity

Author – Brain Kissock

Christian Science Sentinel Volume 116, Issue 18, May 5, 2014

कुछ वर्षो पहले, मैं एक व्यक्ति के साथ गोल्फ खेलता था जो 90 वर्षो की उम्र में भी गोल्फ के मैदान में चलता था, अधिकतर दिन अभ्यास करता था, और यहाँ तक कि उसने एक वीडियो कैमरा खरीदा यह देखने के लिए कि कैसे वह अपनी गोल्फ की गेंद के घुमाव में सुधार ला सकता था। उसे संगीत, थियेटर, अच्छी पुस्तकों, अपने बच्चों तथा पौत्र तथा पौत्रियों, कला और अन्य गतिविधियों में रूचि थी। वह बहुतों के लिए प्रेरणा स्त्रोत था। एक दूसरा मित्र, जो लगभग 90 वर्ष का था, अभी भी टेनिस खेलता था और सर्दियों में स्कीइंग करता था। मुझे, दोनों ही चिरयुवा प्रतीत होते थे!

मैं अन्य कई को जानता हूँ जो वद्धावस्था में आश्चर्यजनक ढंग से सक्रिय हैं। परन्तु तब क्या यदि हम बढ़ती उम्र के विचारों से संघर्ष कर रहे हैं? क्या कुछ ऐसा है जो हम कर सकते हैं? हमें शायद अपने आप से पूछना होगा : मैं किस में विश्वास कर रहा हूँ? मैं क्या देख रहा हूँ? मैं क्या स्वीकार कर रहा हूँ? हम सोच में बढ़ती उम्र की किसी भी तरह की छवियों को मिटा देने के लिए कभी भी न तो बहुत अधिक वृद्ध हैं न ही बहुत अधिक युवा।

शुरू से अन्त तक इतिहास में ऐसे लोग हुए हैं जिन्होंने सीमितता या भय को स्वीकार नहीं किया, और परमेश्वर के साथ अपनी निकटता के द्वारा – सारी असली ताकत का स्त्रोत – खतरे से भरी परिस्थितियों, बीमारी, गरीबी, यहाँ तक कि मृत्यु पर विजय प्राप्त कर ली। बाइबल में पाए जाने वाले पात्रों के बारे में सोचो जैसे मोज़िज़, मिस्त्रवासियों की पराधीनता को स्वीकार न करते हुए; डेविड, गोलायथ की चुनौती को स्वीकार करते हुए; डेनियल शेर की माँद में प्रवेश करते हुए; तथा नोहा बाढ़ का सामना करने के लिए एक उपाय ढूँढते हुए।

दिव्य मन, असीम अस्तित्व, असीम रहस्योद्घाटन को प्रस्तुत करता है।

क्राइस्ट जीसस ने हर प्रकार की कल्पनीय सीमितताओं पर विजय प्राप्त की। उन्होंने समुद्र के ऊपर चल कर भौतिक विज्ञान के कानूनों को चुनौती दी; वह एक प्रतिरोधी भीड़ के बीच में से चुपचाप, तेजी से चले गए; उन्होंने अपने हजारों अनुयायियों को भोजन खिला कर प्रचुर आपूर्ति को प्रत्यक्षीकृत किया; उन्होंने सारी इन्सानी प्रतिबंधित सीमाओं को लांघते हुए हर प्रकार के रोगों का उपचार किया। उन्होंने हमें केवल मार्ग ही नहीं दिखाया, अपितु हम से जाकर वैसा ही करने का आग्रह किया : "बीमार का उपचार करो, कोढ़ियों को शुद्ध करो, मृतकों को जीवित करो, दुष्टात्माओं को निकाल फैंकों" (मत्ती 10:8)।

---

* जो शब्द बड़े अक्षरों में लिखे गये हैं वह परमेश्वर के समानार्थक शब्द हैं।

For this translation in English and other translations in [Hindi], please see http://translations.christianscience.com

Translation © 2015 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

ग्रन्थों में भी काफी सबूत हैं कि हमें ह्रास या आयु, सेहत या आपूर्ति से संबंधित किसी प्रकार के प्रतिबंधों के मत को स्थान नहीं देना। किसी भी अवस्था में हमें प्रतिबंधित सक्रियता या घटते हुए अवसरों को स्वीकार करने या उनके सामने हार मानने की जरूरत नहीं। उदाहरणतः बाइबल में कालेब ने कहा कि 85 वर्ष की उम्र में वह उतना ही शक्तिशाली था जितना कि 40 वर्ष में था जब मोज़िज़ ने उसे इस्राएलियों के लिए जगह ढूँढ़ने के लिए भेजा था (देखें यहोशू 14:6–11)।

क्रिश्चियन साँयस की खोज़कर्ती तथा संस्थापिका, मेरी बेकर एडी, जिन्होंने अपने 80 वर्ष के अन्त में, एक अर्न्तराष्ट्रीय दैनिक समाचार पत्र, द क्रिश्चियन साँयस मानीटर प्रारम्भ किया, इस कथन में संक्षिप्त रूप से समावेश करती है: "सौर वर्षों से जीवन का माप–तोल युवावस्था को छीन लेता हैऔर आयु को कुरूपता प्रदान करता है – – – कालानुक्रमिक आँकड़े विशाल चिरकाल का हिस्सा नहीं हैं। जन्म तथा मृत्यु की समय–सारणियाँ पुरूषत्व तथा स्त्रीत्व के विरूद्ध बहुत से षडयन्त्र हैं। उस सब को जो अच्छा और सुंदर है, मापने तथा सीमित करने की त्रुटि न करके, मानव सत्तर वर्षों से भी अधिक समय तक आनन्द मनाएगा तथा अपने उत्साह, ताज़गी, और आशा को बनाए रखेगा" (साँयस एण्ड हैल्थ विद की टू द स्क्रिपचर्स, पृष्ठ 246)।

दिव्य **मन** असीम अस्तित्व, असीम रहस्योद्घाटन, असीम अभिव्यक्ति, असीम ज्ञान, असीम उपचार को प्रस्तुत करता है। फिर, बढ़ती हुई उम्र के बारे में संसार के मतों तथा भय को स्वीकार न करना कितना तर्कसंगत है। यह **परमेश्वर** ही है जिसमें हम "रहते हैं, चलते हैं, और हमारा अस्तित्व है" (प्रेरितों के कार्य 17:28)।

इसलिए आओ हम अपनी सोच को शारीरिक संरचना से परे ले जाएँ, शंकाओ और भय, झूठी छवियों तथा सुझावों को त्याग दें। इसकी बजाए, और इससे भी अधिक महत्वपूर्ण, आओ हम निरंतर प्रार्थना करें, **परमेश्वर** के स्वभाव तथा अपने चिरयुवा आध्यात्मिक अस्तित्व के तथ्यों को बेहतर तरीके से समझने के लिए। **परमेश्वर** के प्रेम में, और सशक्त, समर्थक उपस्थिति में हम कभी भी न समाप्त होने वाले समन्वय और अच्छी सेहत का आनन्द उठाते हैं।

ऐसा कुछ भी नहीं है जो हमें प्रतिदिन नवीकृत उत्साह और सजीवता की एक बेहतर समझ के साथ, **परमेश्वर** की अच्छाई तथा निरंतर सक्रियता में हर क्षण आनंदित होते हुए, आगे बढ़ने से रोक सके।

Translation © 2015 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.